वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 269
ISBN 978-93-80353-06-7

त्रिकाल चौबीसी विधान

– रचयित्री –
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रचना रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फरवरी 2010	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव ने प्रवचनसार में कहा है-

असुहोदयेण आदा, कुणरो तिरियो भवीय णेरइयो।
दुक्खसहस्सेहिं सदा, अभिंधुदो भमदि अच्चंतं।।
धम्मेण परिणदप्पा, अप्पा जदि सुद्धसंपयोग जुदो।
पावदि णिव्वाणसुहं, सुहोवजुत्तो च सग्गसुहं।।

अर्थात् अशुभ उपयोग से यह जीव तिर्यञ्च, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्त्रों दुःखों को सहन करता हुआ इस संसार में परिभ्रमण किया करता है तथा धर्म से परिणत हुआ जीव शुद्धोपयोग से तो निर्वाण की प्राप्ति कर लेता है और शुभोपयोग से स्वर्ग के सुखों की प्राप्ति करता है।

शुद्धोपयोग का प्रारंभ तो दिगम्बर मुनि अवस्था में होता है किन्तु सम्यग्दृष्टि श्रावक को मोक्षमार्ग पर चलने के लिए शुभोपयोग में रहना भी आसान बात नहीं है। जीव के जब जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आता है तो जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं से संक्लेशित रहकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को अपना समय शुभोपयोग में व्यतीत करने हेतु भगवान् की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा वगैरह करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं।

पूजा विधानों के द्वारा भगवान की भक्ति एवं गुणानुवाद करने का सरल माध्यम बीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रदान किया है। इसके लिए जैन समाज उनका चिरऋणी रहेगा। पूज्य माताजी ने एक-दो नहीं अपितु २५० ग्रंथों का लेखन कर संपूर्ण विश्व को अनुपम कृतियाँ प्रदान की जिसमें उनकी नूतन कृति के रूप में यह "त्रिकाल चौबीसी विधान" है। वास्तव में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शब्दों में बाँधना कठिन है। उन्होंने जहाँ एक ओर बालकों के लिए बाल विकास जैसी सरल पुस्तकों की रचना की है वहीं अष्टसहस्री जैसे महानतम ग्रंथ की टीका करके समस्त साधुवर्ग एवं विद्वत् वर्ग को आश्चर्यचकित कर दिया। उनके प्रत्येक कृति में आगम का सार "गागर में सागर" रूप में समाहित रहता है।

ऐसी ही सारभूत यह त्रिकाल चौबीसी विधान नामक नूतन कृति है जिसके द्वारा भक्तगण तीन चौबीसी की ७२ जिनप्रतिमाओं की अर्चना कर महान पुण्य का बंध करें और भगवंतों के गुणानुवाद से मनवांछित कार्य की सिद्धि करें यही शुभेच्छा है।

प्रस्तावना

ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जिस प्रकार से जैनधर्म प्राकृतिक एवं अनादिनिधन धर्म है उसी प्रकार से उस जैनधर्म का परिवर्धन करने वाले तीर्थंकरों की परम्परा भी अनादि है।

इस भरतक्षेत्र के आर्यखंड में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश मात्र ५ तीर्थंकर भगवान ही शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में जन्में, शेष तीर्थंकरों ने अलग-अलग स्थानों पर जन्म लिया तथा मात्र २० तीर्थंकर ही शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर से मोक्ष गए शेष ४ तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों से मोक्ष गए। वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की ही भांति प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी काल में उसी शाश्वत तीर्थ अयोध्या में २४ तीर्थंकर होते रहे हैं आगे भी होते रहेंगे तथा शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिार से मोक्ष प्राप्त करेंगे। शास्त्र पुराणों में वर्णित है कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के मोक्षगमन के पश्चात् उनके पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत ने रत्नों से निर्मित तीन चौबीसी की ७२ जिनप्रतिमाएं विशाल जिनमंदिर बनवाकर कैलाशपर्वत पर विराजमान करवाईं थीं आज भी कहीं-कहीं त्रिकाल चौबीसी की ७२ प्रतिमाओं के दर्शन हमें प्राप्त होते हैं। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी पावनप्रेरणा से सर्वप्रथम शाश्वत तीर्थ अयोध्या में त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर का निर्माण होकर कमल के ऊपर सुन्दर प्रतिमाएं विराजमान हुईं, पुनः सन् २००० में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाणमहामहोत्सव के सुअवसर पर त्रिकाल चौबीसी की ७२ रत्नप्रतिमाओं की भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जिनके दर्शन मन को विशेष आह्लाद प्रदान करते हैं। उसी क्रम में पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर की स्थापना हुई जिनका दर्शन भक्तगणों को दिव्य शांति की अनुभूति कराता है और जिनधर्म की शाश्वत सत्ता को सिद्ध करता है। वर्तमान में जम्बूद्वीप के अष्टापद मंदिर में विराजित ७२ भगवन्तों के दर्शन भी मन को आल्हाद प्रदान करते हैं।

पूज्य माताजी ने जहाँ इन जिनप्रतिमाओं के दर्शन करवाकर भक्तों को सातिशय पुण्यबंध का सुअवसर प्रदान किया वहीं आचार्य कुन्दकुन्द के समान स्वरचित महानतम ग्रंथों की श्रृंखला में "त्रिकाल चौबीसी विधान" की रचना कर भी आप सभी को प्रदान किया है जो भक्तों के मनोरथों को सिद्ध करने के साथ-साथ उन्हें परमात्मा सुख भी प्रदान करेगी। इस मंगलकारी विधान में भूत, भविष्यत् , वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकरों की अर्चना की गयी है और भूत, भविष्यत्, वर्तमान चौबीसी संबंधी २४-२४ अर्घ्य इस प्रकार कुल ७२ अर्घ्य ३ पूर्णार्घ्य है और भूत, भविष्यत्, वर्तमान चौबीसी संबंधी २४-२४ अर्घ्य इस प्रकार कुल ७२ अर्घ्य ३ पूर्णार्घ्य हैं। आप भी इस विधान के माध्यम से त्रिकाल चौबीसी भगवन्तों का वन्दन करते हुए मनवांछित सिद्धि के साथ सातिशय पुण्य बंध करें, यही शुभेच्छा है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)

गृहस्थ का नाम—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् १९७४ में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

१. सन् १९७२ से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

२. सन् १९७४ से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

३. सन् १९७४ से १९८५ तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

४. सन् १९७४ से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

५. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग १५००० ग्रंथ संग्रहीत हैं।

६. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

७. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

८. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

९. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

१०. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

११. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

१२. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खीरावली, दिल्ली-६।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-१९, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
७. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
८. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
९. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
१०. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
११. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
१२. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
१३. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
१४. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तखंड)।
१५. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
१६. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
१७. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-४, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉन्ट प्लेस, नई दिल्ली।

परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७९२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
१४. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
१५. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-७।
१६. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
१७. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
१८. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

विधान के मण्डल का नक्शा

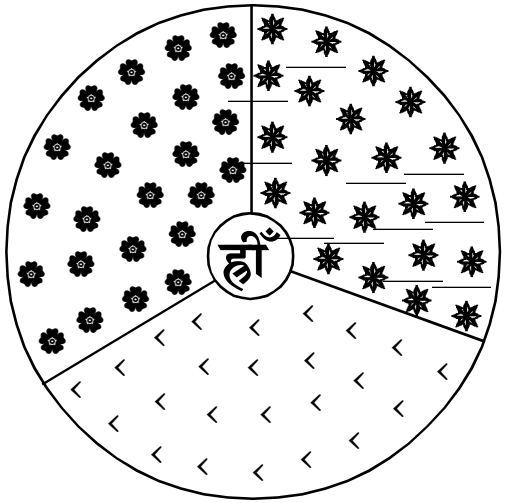

प्रथम वलय में भूतकालीन तीर्थंकर संबंधी	—२४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में वर्तमानकालीन तीर्थंकर संबंधी	—२४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में भविष्यत्कालीन तीर्थंकर संबंधी	—२४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
कुल	—७२ अर्घ्य ३ पूर्णार्घ्य

त्रिकाल चौबीसी विधान

तीन चौबीसी पूजा (समुच्चय)

स्थापना —गीता छंद

मंगलमयी सब लोक में, उत्तम शरण दाता तुम्हीं।
वर तीन चौबीसी जिनेश्वर, तीर्थकर्ता मान्य ही।।
इस भरत में ये भूत संप्रति, भावि तीर्थंकर कहे।
आह्वान करके जो जजें, वे स्वात्मसुख संपति लहें।।१।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक —स्रग्विणी छंद

नीर सरयू नदी का भरा लायके।
धार देऊं प्रभो पाद में आयके।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।१।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जलं.....।

गंध सौगंध कर्पूर केशर मिली।
पाद चर्चत सम्यक्त्व कलिका खिली।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।२।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः चंदनं.....।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिये।
पुंज को धारते स्वात्म संपत लिये।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।३।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यःअक्षतं.....।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद है।
नाथ पद पूजते कामशर भंग है।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।४।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं.....।

मुद्ग लाडू इमरती कनक थाल में।
पूजते भूख व्याधी हरूँ हाल में।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।५।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं.....।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की।
नाथ की आरती मोह को चूरती।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।६।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः दीपं.....।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।७।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः धूपं.....।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद अर्चते मुक्तिकांता मिले।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।८।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः फलं.....।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूँ नाय के भाल में।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।९।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं.....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, त्रिभुवन शांतीकर सदा।
त्रिकरण शुद्धी हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य —**ॐ ह्रीं त्रैकालिकद्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा

तीर्थंकर के जन्म से, नगरि अयोध्या वंद्य।
गाऊँ गुणमाला अबे, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।१।।

शेरछंद

जैवंत मुक्तिकान्त देव देव हमारे।
जैवंत भक्तवृन्द भवोदधि से उबारें।।
जैवंततीन काल के तीर्थेश बहत्तर।
जैवंत तीस चौबिस के सर्व तीर्थंकर।।२।।

जय भूतकाल के अनंतानंत तीर्थंकर।
जय जय भविष्य के अनंतानंत तीर्थंकर।।
इन भूत भावि जिनकी जन्मभूमि अयोध्या।
शाश्वत त्रिलोक वंद्य महातीर्थ अयोध्या।।३।।

जय पंचकल्याणक पति जिनराज को नमूँ।
जय दो या तीन कल्याणक पती नमूँ।।
हे नाथ! आप जन्म के छह माह ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मात के महले।।४।।

जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति भाव से।।
प्रभु गर्भ कल्याणक महाउत्सव विधी करें।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।५।।

हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कंप से आश्चर्य हो उठे।।

भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।६।।

सुरराज या जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिलके महोत्सव को मनाते।।
जब आप हो विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मनावते।।७।।

जब घातिया को घात ज्ञानसंपदा भरें।
तब इन्द्र या अद्भुत समवसरण विभव करें।।
जब आप मृत्यु जीत मुक्तिधाम में बसें।
सिद्धयंगना के साथ परमानंद सुख चखें।।८।।

सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणकपती को शीश नवाते।।
मैं आप शरण पायके सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस ''ज्ञानमती'' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।९।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जयमाला अर्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो तीन चौबीसी महापूजा महोत्सव को करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिन नाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी 'ज्ञानमति' युत पाय निजसंपति वरें।।

इत्याशीर्वादः

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र भूतकाल तीर्थंकर पूजा

स्थापना-गीता छंद

जंबूद्रुमांकित प्रथम जंबूद्वीप में दक्षिण दिशी।
वर भरत क्षेत्र प्रधान तहं षट्काल वर्ते नितप्रती।।
जहं भूतकाल चतुर्थ में चौबीस तीर्थंकर भये।
थापूँ यहाँ वर भक्ति पूजन हेतु मन हर्षित भये।।१।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थ भूतकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थ भूतकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थ भूतकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

चाल-नंदीश्वर पूजा

जिनवचसम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिनचरणांबुज में धार, दे जग द्वंद्व हरूं।।
इस भरतक्षेत्र के भूतकालिक तीर्थंकर।
मैं पूजू भक्ति समेत, होऊं क्षेमंकर।।१।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं.....।

जिनतनुसम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूं।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।। इस.।।२।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं.....।

जिनगुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरें।।
इस भरतक्षेत्र के भूतकालिक तीर्थंकर।
मैं पूजू भक्ति समेत, होऊं क्षेमंकर।।३।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं.....।

जिनयश सम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूं हर्ष हिये।।इस.।।४।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं.....।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृततृप्त जिनेंद्र, पूजत भूख टरे।।इस.।।५।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं.....।

वर भेदज्ञानसम ज्योति, जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञानउद्योत हिये।।इस.।।६।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं.....।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निजआतम सौरभ नित्य, दशदिश माहिं भरे।।इस.।।७।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्म-दहनाय धूपं.....।

जिनध्वनि सम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।इस.।।८।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं.....।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ्य समर्घ्य किया।।
इस भरतक्षेत्र के भूतकालिक तीर्थंकर।
मैं पूजू भक्ति समेत, होऊं क्षेमंकर।।९।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं.....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांती कर सदा।
चउसंघशांती हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

भूतकालीन २४ तीर्थंकरों के २४ अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पंचकल्याणक के धनी, तीर्थंकर चौबीस।
अर्चन हित पुष्पांजलि, करूँ नवाऊँ शीश।।१।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छन्द

कर्मनाश निर्वाण महालक्ष्मी वरी।
तीर्थंकर 'निर्वाण' सौख्य अमृत झरी।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय चित्त हरषाय के।
तिरूं भवाम्बुधि भक्ती नौका पाय के।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भवसागर तिरकर भी 'सागर' सिद्ध हैं।
मुनिगण वंदे नितप्रति हर्ष समृद्ध हैं।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय चित्त हरषाय के।
तिरूं भवाम्बुधि भक्ती नौका पाय के।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सागरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महासाधु मिल नित्य प्रभू वंदन करें।
ऐसे 'महासाधु' जिनवर भव दुख हरें।।पूजूँ.।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासाधुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

त्रिविध कर्ममल नाश विमल पद पा लिये।
तीर्थंकर 'विमलप्रभ' को नित वंदिये।।पूजूँ.।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

लक्ष्मी अन्तर बाह्य उभय से शोभते।
'श्रीधर' वर जिनराज भविक मन मोहते।।पूजूँ.।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीधरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

मोक्षगतीप्रद श्री 'सुदत्त' जिनराज है।
मुनिगण गणधर वंदित जग सिरताज हैं।।पूजूँ.।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदत्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मोक्ष महल है अमल कांतिधर सोहता।
श्री जिनेश 'अमलप्रभ' से मन मोहता।।पूजूँ.।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमलप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

भव्य जनों का नित करते उद्धार जो।
'उद्धर' जिनको जजूँ भवोदधि पार जो।।पूजूँ.।।८।।

ॐ अर्हं श्री उद्धरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'अंगिर' जिनवर भव भव दुख से दूर हैं।
भवि भव अग्नी शमन हेतु जलपूर हैं।।पूजूँ.।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंगिरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'सन्मति' जिनवर जग को सन्मति दे रहे।
निज भक्तों की नौका भव से खे रहे।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय चित्त हरषाय के।
तिरूं भवाम्बुधि भक्ती नौका पाय के।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सन्मतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'सिंधु' जिनेश्वर गुणसिंधू जग में कहे।
जो पूजें सो स्वात्मसुधा बिंदू लहें।।पूजूँ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंधुनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'कुसुमांजलि' जिननाथ भविकजन दुःख हरें।
भक्ति कुसुम अँजलि से जन अर्चन करें।।पूजूँ.।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुसुमांजलिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

शिवसुखभर्ता 'शिवगण' जिनवर लोक में।
शिवसुख साधन हेतु जजें जन धोक दें।।पूजूँ.।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवगणनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'उत्साह' जिनेश्वर गुण रत्नों भरे।
निजसुख के उत्साही जन पूजन करें।।पूजूँ.।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्साहनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु 'ज्ञानेश्वर' पूर्ण ज्ञान के नाथ हैं।
जो पूजें धर प्रीति बनें सनाथ हैं।।पूजूँ.।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानेश्वरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

परमपिता 'परमेश्वर' त्रिभुवन ईश हैं।
गणधर भी नित नमें नमावें शीश हैं।।पूजूँ.।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेश्वरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'विमलेश्वर' तीर्थंकर को जो पूजते।
उन आतम से सकल कर्ममल छूटते।।पूजूँ.।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलेश्वरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जिनकी यशवल्ली तिहुंजग में विस्तरी।
नाथ 'यशोधर' को मैं वंदूँ शुभघरी।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय चित्त हरषाय के।
तिरूं भवाम्बुधि भक्ती नौका पाय के।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यशोधरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'कृष्ण' जिनेश्वर कृत्स्न कर्म को चूर के।
पहुंचे शिवपुर धाम सर्वगुण पूर के।।पूजूं.।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृष्णनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

तीर्थंकर का नाम 'ज्ञानमति' जानिये।
उनको पूजत ज्ञान अतीन्द्रिय ठानिये।।पूजूं.।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

नाथ 'शुद्धमति' तीर्थंकर भवमल हरें।
उनको पूजत शुद्ध स्वात्म संपति वरें।।पूजूँ.।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जो भव्यों का भद्र करें करुणा लिये।
परमकारुणिक 'श्रीभद्र' सब के लिए।।पूजूँ.।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीभद्रनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सब दोषों को उलंघ नाम 'अतिक्रांत' है।
मृत्युमल्लहर मुक्तिवल्लभाकांत हैं।।पूजूँ.।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतिक्रांतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कर्म शांत कर परम शांति को पा लिये।
'शांत' जिनेश्वर शांति करो सब के लिए।।पूजूँ.।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

गीता छंद

निर्वाण आदी शांत तीर्थंकर सुअंतिम जानिये।
पूर्णार्घ्य ले चौबीस जिनकी अर्चना विधि ठानिये।।
जो भक्ति श्रद्धा भाव से, तीर्थेश का अर्चन करें।
वे पुनर्भव को दूर कर, निज आत्म का दर्शन करें।।२५।।

ॐ ह्रीं निर्वाणादिशांतनाथजिनपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांती कर सदा।
चउसंघ शांती हेतु, शांती धारा मैं करूं।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य*-ॐ ह्रीं त्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

अनंग शेखर छंद

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक औ त्रिकाल एक साथ भासते रहें।
जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देख के,
असंख्य सूर्य और चन्द्रमा भी लाजते रहें।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये माहात्म्य देख,
भक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।१।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधुवृन्द और गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेंद्र देवियों की टोलियां असंख्य आ रहीं,
खगेश्वरों की पंक्तियां अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमिगोचरी मनुष्य नारियां तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों की टोलियां भी आ रहीं।।२।।

सुबारहों सभा विषे स्वकीय ही स्वकीय में,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पांच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।
निजात्म तत्त्व को सँभाल तीन रत्न से निहाल,
बार बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनन्त सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनन्त दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।३।।
स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्तिअँगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पाय के,
अनन्त काल रूप पँच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनन्त शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।४।।

दोहा

नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
'ज्ञानमती' दुःख मेट के, करो भवांबुधि पार।।५।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थभूतकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो तीन चौबीसी महापूजा महोत्सव को करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिन नाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी 'ज्ञानमति' युत पाय निजसंपति वरें।।

इत्याशीर्वादः

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमान तीर्थंकर पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

वृषभादि चौबिस तीर्थंकर इस भरत के विख्यात हैं।
जो प्रथित जंबूद्वीप के संप्रति जिनेश्वर ख्यात हैं।।
इन तीर्थंकर के तीर्थ में सम्यक्त्व निधि को पायके।
थापूँ यहाँ पूजन निमित अति चित्त में हरषाय के।।१।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

देवगंगा सलिल स्वर्ण झारी भरूँ।
नाथ पादाब्ज में तीन धारा करूँ।।
श्री वृषभ आदि चौबीस जिनराज को।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को।।१।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

गंध केशर घिसा के कटोरी भरूँ।
आपके पाद पंकज समर्चन करूँ।।श्री वृषभ.।।२।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

चँद्र की चांदनी सम धवल शालि हैं।
जो जजें पुंज से वे सुकृत-शालि हैं।।
श्री वृषभ आदि चौबीस जिनराज को।
पूजते ही लहूं स्वात्म साम्राज्य को।।३।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

कुँद मचकुंद बेला चमेली लिये।
कामहर नाथ पद में समर्पित किये।।श्री वृषभ.।।४।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं.....।

पूरिका लड्डुओं से भरूँ थाल मैं!
पूजहूँ आपको क्षुध् व्यधा नाशने।।श्री वृषभ.।।५।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

दीप कर्पूर की ज्योति से पूजते।
ज्ञान उद्योत हो मोह अरि छूटते।।श्री वृषभ.।।६।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
आत्म सौरभ उठे नाथ पद सेवते।।श्री वृषभ.।।७।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद पूजते मुक्ति सँपति मिले।।श्री वृषभ.।।८।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

तोय गंधादि वसुद्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूं नाय के भाल मैं।।श्री वृषभ.।।९।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसबंधिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतिकर सदा।
चउसंघ शांती हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।।
शांतये शांतिधारा।
हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

वर्तमानकालीन २४ तीर्थंकरों के २४ अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

शुद्ध बुद्ध परमात्मा, पाया ज्ञान प्रभात।
परमानंद निजात्म में, मग्न रहें दिन रात।।१।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद-(चाल-परं परंज्योति कोटि चंद्रादित्य.....)

'वृषभ देव' के चरण कमल को, नित शत इंद्र जजें हैं।
कर्मकालिमा दूर भगा कर, स्वातम तत्त्व भजे हैं।।
मैं भी दृढ़ भक्ती से पूजूँ, कर्म श्रृँखला टूटे।
प्रभु मुक्ती होने तक मेरा, सम्यक् रत्न न छूटे।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कर्म शत्रु को जीत 'अजित' जिन, जग में ख्यात हुए हैं।
नाथ आपका आश्रय लेकर, बहुजन पार हुए हैं।।मैं.।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

दृढ़ पुरुषार्थ सफल कर तुमने, भवभय नाश किया है।
इसीलिए इंद्रों ने सार्थक, 'संभव' नाम दिया है।।मैं.।।३।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सब जग को आनंदित करते, 'अभिनंदन' भगवंता।
जो जन ध्यावें हृदय कमल में, भवभय व्याधि हरंता।।
मैं भी दृढ़ भक्ती से पूजूं, कर्म श्रृँखला टूटे।
प्रभु मुक्ती होने तक मेरा, सम्यक् रत्न न छूटे।।४।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कुमति त्याग कर सुमतिवरण कर, 'सुमति' नाम प्रभु पाया।
मुझको भी सुमती दीजे अब, मैं जग से अकुलाया।।मै.।।५।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

मुक्तीपद्मा से आलिंगित, 'पद्मप्रभु' जग नामी।
जो जन पादपद्म तुम सेते, होते शिवश्री स्वामी।।मै.।।६।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'सुपार्श्व' के पास आय के, मिटे सकल जग फिरना।
प्रभो आप वच नाव पाय के, होय भवोदधि तिरना।।मैं.।।७।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'चन्द्रनाथ' तुम आस्य चन्द्र से, वचनामृत झरता है।
कर्णपुटों से पीते ही तो, हर्षाम्बुधि बढ़ता है।।मैं.।।८।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

गणधरगण भी प्रभु गुण गाकर, पार नहीं पाते हैं।
'पुष्पदंत' तुम नाम मात्र से, निज आनन्द पाते हैं।।मै.।।९।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मोह अग्नि से झुलस रहा जग, 'शीतल' शीतल करिये।
नाथ! शीघ्र ही भाक्तिक जन की, सकल भरम बुद्धि हरिये।।मैं.।।१०।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'श्रेयांस' जगत में सबको, श्रेयस्कर हितकारी।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल पूजें, गुण गावें रुचिधारी।।
मैं भी दृढ़ भक्ती से पूजूं, कर्म श्रृँखला टूटे।
प्रभु मुक्ती होने तक मेरा, सम्यक् रत्न न छूटे।।११।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'वासुपूज्य' वासवगण पूजित, वसुगुण मुख्य धरे हैं।
सुर किन्नरियाँ वीणा लेके, प्रभु गुणगान करे हैं।।मैं.।।१२।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भावकर्ममल द्रव्यकर्ममल, धोकर 'विमल' हुए हैं।
विमल धाम हेतु मुनिगण भी, तुम पदलीन हुए हैं।।मैं.।।१३।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

भव 'अनंत' को सर्वनाश कर, नाथ अनंत सुखी हैं।
तुम पद पंकज जो भवि पूजे, होते पूर्ण सुखी हैं।।मै.।।१४।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धर्म चक्रधर 'धर्म' जिनेश्वर, दशविध धर्म प्रदाता।
मुनिगण सुरगण विद्याधरगण, वंदत पावें साता।।मैं.।।१५।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'शांतिनाथ' तुम पद आश्रय ले, भविजन शांती पाते।
इसी हेतु जग से अकुला कर, तुम शरणागत आते।।मै.।।१६।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चिच्चैतन्य सुधारस दाता, 'कुंथुनाथ' भगवंता।
जो तुम वंदे भवसुख खंडे, चित्सुख आस धरंता।।मै.।।१७।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'अरजिनवर' का वंदन करके, सुरनर पुण्य कमाते।
निज कर में निजगुण संपत्ति ले, सब दुख दोष गँवाते।।
मैं भी दृढ़ भक्ती से पूजूँ, कर्म श्रृँखला टूटे।
प्रभु मुक्ती होने तक मेरा, सम्यक् रत्न न छूटे।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

काम मल्ल औ मोह मल्ल को, मृत्यु मल्ल को चूरा।
'मल्लिनाथ' ने भक्तजनों के, मनवांछित को पूरा।।मै.।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

'मुनिसुव्रत' भगवान् स्वयं में, मुनिव्रत धर भव जीता।
उनके पद चिन्हों पर चलके, अगणित ने यम जीता।।मै.।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

रत्नत्रय निधि के स्वामी हैं, 'नमि' तीर्थंकर जग में।
फिर भी सर्व परिग्रह विरहित, मुद्रा नग्न प्रगट में।।मै.।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'नेमिनाथ' ने राजमती तज, मुक्तिवल्लभा चाही।
सरस्वती माता ने उनकी, अनुपम कीर्ती गाई।।मैं.।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कमठ दैत्य के उपसर्गों से, परम सहिष्णु कहाये।
'पारस' नाम मंत्र मन धारें, सहनशक्ति वे पायें।।मै.।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'वर्धमान' अतिवीर वीर प्रभु, सन्मति नाम तुम्हारे।
महावीर प्रभु को जो वंदे, सकल अमंगल टारें।।मैं.।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

वृषभदेव को आदि ले, महावीर पर्यन्त।
श्री चौबीस जिनेश को, पूजत हो भव अंत।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभादिवर्धमानांतेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मय चिंतामणि रतन, तीन भुवन के ईश।
गाऊँ तुम जयमालिका, नमूँ नमूँ नत शीश।।

पृथ्वी छंद

जिनेन्द्र! तुम शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अविकार हो।
जिनेंद्र! तुम वर्णहीन बिनमूर्ति साकार हो।।
निराभरण हो तथापि जग के अलंकार हो।
अनंतगुण पुंजभूत फिर भी निराकार हो।।१।।

अनंत शुचिदर्श से सकल लोक अवलोकते।
अनंत वर ज्ञान से सकल भव्य संबोधते।।
अनंत निज शक्ति से श्रम न हो कदाचित् तुम्हें।
अनंत वर सौख्य से अमित काल तृप्ती तुम्हें।।२।।

न चक्षु न हि कर्ण घ्राण न हि स्पर्शनेंद्रिय तुम्हें।
न जीभ अतएव जिन अतीन्द्रिय स्वसुख तुम्हें।।
न शब्द रस गँध वर्ण विषयादि स्पर्श ना।
न क्रोध मद छद्म लोभ रति द्वेष संघर्ष ना।।३।।

न कर्म नोकर्म नाथ न हि भाव कर्मादि हैं।
न बँध न हि आस्त्रवादि नहि शल्य बाधादि हैं।।
न रोग शोकादि नाथ न हि जन्म मरणादि हैं।
न क्लेश न हि इष्ट निष्ट वीयोग योगादि हैं।।४।।

स्वयं परम तृप्त नाथ परमैक परमातमा।
स्वयं स्वयंभू स्वतः सुख स्वरूप सिद्धातमा।।
अमूर्तिक विभो तथापि चिनमूर्ति चिंतामणी।
अपूर्व तुम कल्पवृक्ष त्रैलोक्य चूड़ामणी।।५।।

अनंत भव सिंधु से तुरत नाथ! तारो मुझे।
अनंत दुःख अब्धि से जिनपते! उबारो मुझे।।
प्रभो मुझ समस्त दोष अब तो क्षमा कीजिये।
स्व 'ज्ञानमति' नाथ शीघ्र करके कृपा दीजिये।।६।।

घत्ता

वृषभादि जिनेश्वर, मुक्तिवधूवर, सुखसंपतिकर तुमहिं नमूँ।
निज आतम शुचिकर, सम्यक् निधिधर, फेर न भव वन बीच भ्रमूँ।।७।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो तीन चौबीसी महापूजा महोत्सव को करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिन नाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी 'ज्ञानमति' युत पाय निजसंपति वरें।।

इत्याशीर्वादः।

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजा

स्थापना–गीताछंद

इस भरत क्षेत्र विषे जिनेश्वर, भविष्यत् में होएंगे।
उनके निकट में भव्य अगणित कर्मपंकिल धोएंगे।।
चौबीस तीर्थंकर सतत वे, विश्व में मंगल करें।
मैं पूजहूँ आह्वान कर, मुझ सर्वसंकट परिहरें।।१।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं–चामरछंद

सिंधुनीर स्वच्छ स्वर्ण भृंग में भराइये।
श्री जिनेंद्रदेव पाद पद्म में चढ़ाइये।।
भाविकाल के जिनेन्द्रदेव की समर्चना।
जो करेंगे वे यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।१।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

अष्टगंध लेय नाथ पाद में चढ़ाइये।
मोहताप शांति हेतु भक्ति को बढ़ाइये।।भावि.।।२।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

चंद्ररश्मि के समान धौत शालि थाल में।
नाथ अग्र पुंज देय सर्व सौख्य हाल में।।
भाविकाल के जिनेन्द्रदेव की समर्चना।
जो करेंगे वे यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।३।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

पारिजात चंपकादि पुष्प लेय पूजिये।
काममल्ल चूर के निजात्म तृप्त हूजिये।।भावि.।।४।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

मालपूप मोदकादि व्यंजनादि लाइये।
नाथ चरण पूज भूख व्याधि को नशाइये।।भावि.।।५।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

स्वर्ण पात्र में कपूर ज्वाल आरती करूं।
मोहध्वांत नाश भेदज्ञान भारती वरूँ।।भावि.।।६।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

अग्निपात्र में सुगंध धूप खेवते सदा।
कर्मपुंज को जलाय पाऊं स्वात्म संपदा।।भावि.।।७।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

द्राक्ष आम औ बदाम श्रीफलादि लाइये।
स्वात्मसौख्यपानहेतु आपको चढ़ाइये।।भावि.।।८।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

तोयगंध अक्षतादि अष्ट द्रव्य लाइये।
अर्घ्य को चढ़ायके अखंड सौख्य पाइये।।
भाविकाल के जिनेन्द्रदेव की समर्चना।
जो करेंगे वे यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।९।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुँजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांतीहेत, शांतीधारा मैं करूं।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः

भविष्यत्कालीन २४ तीर्थंकरों के २४ अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तीर्थंकर चौबीस ये, सर्वोत्तम गुणवान।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ पूजन हेतु प्रधान।।१।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

गीता छंद

'श्री महापद्म' जिनेंद्र के, पद पद्म को जो पूजते।
जगद्वंद्व फंद निमूल कर, वे सर्व दुख से छूटते।।
भावी जिनेश्वरदेव की मैं, भक्ति से पूजा करूं।
नवलब्धिसिद्धीहेतु प्रभु की, चित्त में श्रद्धा धरूं।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महापद्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'सुरदेव' तीर्थंकर सभी के, पापमल को धोवते।
जो नित्य ही उनको जपें, वे सर्व व्याधी खोवते।।
भावी जिनेश्वरदेव की मैं, भक्ति से पूजा करूं।
नवलब्धिसिद्धीहेतु प्रभु की, चित्त में श्रद्धा धरूं।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुरदेवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनवर 'सुपार्श्व' अपूर्व भास्कर, हृदय का तम नाशते।
उनके अलौकिक ज्ञान में, तीनों भुवन ही भासते।।भावी.।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रीमन् 'स्वयंप्रभ' देव अक्षय, अतुल निधि के नाथ हैं।
जो भक्ति से आराधते वे, सत्यमेव सनाथ हैं।।भावी.।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'सर्वात्मभूत' जिनेंद्र के, पदकमल की आराधना।
गणधर मुनीश्वर नित करें, बस स्वात्महेतू साधना।।भावी.।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वात्मभूतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'देवपुत्र' जिनेन्द्र भावी, को सभी जन पूजते।
जो ध्यान में धारें उन्हीं, के कर्मशत्रू धूजते।।भावी.।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवपुत्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तीर्थेश श्री 'कुलपुत्र' त्रिभुवन, के शिखामणि होएंगे।
जो भव्य नित आराधते, वे सर्वसकंट खोएंगे।।भावी.।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुलपुत्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनवर 'उदंक' अनंत गुणमणि, रत्नभूषित होएंगे।
भवि के अनंतानंत दुःखों, को तुरंत ही धोएंगे।।भावी.।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदंकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रीमान 'प्रौष्ठिल' तीर्थभर्ता, धर्म के कर्ता कहे।
उनके चरण को पूजते, यमराज दुखहर्ता भये।।
भावी जिनेश्वरदेव की मैं, भक्ति से पूजा करूं।
नवलब्धिसिद्धीहेतु प्रभु की, चित्त में श्रद्धा धरूं।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रौष्ठिलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'जयकीर्ति' की जय बोलिये, सब कर्म ढीले होएंगे।
जो नाम जिनवर का न लें, चिरकाल दुःख में सोएंगे।।भावी.।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनदेव 'मुनिसुव्रत' तुम्हारी, भक्ति चिंतामणि कही।
जो मांगते हैं भक्तजन, तत्काल फल देवो वही।।भावी.।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'अरनाथ' तीर्थंकर तुम्हें, वंदन करें शतइंद्र भी।
किन्नर मधुर ध्वनि से सदा, गुणगान उच्चरते सभी।।भावी.।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

'निष्पापजिन' निज भक्त को, निष्पाप कर देते अभी।
होंगे यदपि ये भविष्य में, पर दुःख सब हरते अभी।।भावी.।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्पापनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनवर 'विपुल' भगवान सबके, पूज्य माने विश्व में।
जो अर्चते हैं भक्ति से, वे धन्य होते विश्व में।।भावी.।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपुलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनराज 'निर्मल' आपकी, पूजा करम को चूरती।
आराधकों के मनोवांछित, को तुरत ही पूरती।।भावी.।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'चित्रगुप्त' जिनेन्द्र के पद, में सुरेश्वर नित नमें।
देवांगनाएं भक्ति से, नर्तन करें सुर संग में।।
भावी जिनेश्वरदेव की मैं, भक्ति से पूजा करूं।
नवलब्धिसिद्धीहेतु प्रभु की, चित्त में श्रद्धा धरूं।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चित्रगुप्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनवर 'समाधिगुप्त' के पदकंज की आराधना।
आराधकों के लिए सचमुच, मुक्ति की ही साधना।।भावी.।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समाधिगुप्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रीमन् 'स्वयंभू' तीर्थंकर, स्वमेव मुक्ती पाएंगे।
उन साथ में उनके उपासक, भी वहीं पर जायेंगे।।भावी.।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्ह श्री स्वयंभूनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनराज 'अनिवर्तक' सकलगुण शील के भंडार हैं।
जो भव्य श्रद्धा से जजें, होते भवोदधि पार हैं।।भावी.।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिवर्तकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रीमान् 'जय' तीर्थेश, जयशाली महापुण्यात्मा।
वे शुद्ध बुद्ध अपूर्व अनुपम, औ अमल परमात्मा।।भावी.।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जिनवर 'विमल' निज आत्म समरसमय सुधारस को पियें।
वे फिर अनंतानंत अनवधिकाल तक सुख से जियें।।भावी.।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्री 'देवपाल' जिनेश के गुण, गण अमल जो गावते।
वे तीन जग में कीर्तिवल्ली, व्याप्तकर शिवपावते।।भावी.।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवपालनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निजनाम से इस लोक में, सु 'अनंतवीर्य' विख्यात हैं।
उस नाम से हि अनंत शक्ती, प्रगट हो यह ख्यात है।।
भावी जिनेश्वरदेव की मैं, भक्ति से पूजा करूं।
नवलब्धिसिद्धीहेतु प्रभु की, चित्त में श्रद्धा धरूं।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतवीर्यनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य-दोहा

भरतक्षेत्र चौबीस जिन, होंगे धर्मधुरीण।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, होऊं धर्म प्रवीण।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महापद्मअनंतवीर्यादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चौबीस जिनराजवर, कल्पवृक्ष सम आप।
भुक्ति मुक्ति फल देयकर, हरो सकल संताप।।५।।

रोला छंद

अहो भुवन के सूर्य! लोकालोक प्रकाशी।
अहो अखिल भुविचंद्र! जन मन कुमुद विकाशी।।
अहो त्रिजग के ईश! भविजन दुःख विनाशी।
अहो जगत्पति देव! मुनि मन कमल विकाशी।।१।।

तरु अशोक तुम नाथ! सब जन शोक हरे हैं।
मरकत मणिमय पत्र, नाना वर्ण धरे हैं।।
पद्मराग मणि तुल्य, कोपल पुष्प घनेरे।
अनुपम वृक्ष महान, प्रातिहार्य प्रभु तेरे।।२।।

बहुविध वर्ण प्रसून, कल्पतरु से लाते।
नित प्रति भक्ति समेत, सुमन सुमन वर्षाते।।
नाना वर्ण विचित्र, रत्न जटित विष्टर[१] है।
ऐसा वैभव पाय फिर भी आप अधर हैं।।३।।

निर्झर जल सम श्वेत, चौंसठ चमर ढुरावें।
यक्षसुरों के युग्म, बहुविध पुण्य उपावें।।
मुक्ताफल लटकंत, अनुपम मणिमय सोहें।
तीन छत्र भगवंत, के सब जन मन मोहें।।४।।

भामंडल की कांति, चहुंदिश दीप्ति करे हैं।
भविजन के भव सात, उसमें दीख पड़े हैं।।
दुंदुभि बाजें नित्य, बजते कर्ण सुहावें।
भव्य जनों को नित्य, जिनवर पास बुलावें।।५।।

दिव्यध्वनी तुम नाथ, अमृत की निर्झरणी।
जो जन पीते नित्य, वे तरते वैतरणी।।
सात सौ अठरा संख्य, भाषामय वाणी है।
अथवा संख्यातीत, रूप सुकल्याणी है।।६।।

प्रातिहार्य ये आठ, तीर्थंकर के मानें।
इनका नाम समस्त, जन-जन के दुख हाने।।
मैं प्रभु एक अबोध, तुम गुण सिंधु अनंता।
कह न सकूँ लवलेश तुम गुण हे भगवंता।।७।।

फिर भी भक्ति जिनेश! मन में उमड़ रही है।
इसी हेतु हे नाथ! तुम गुण कीर्ति कही है।।
यही एक है चाह, अब ऐसा कर दीजे।
'ज्ञानमती' हो पूर्ण, गर्भवास दुःख छीजे।।८।।

१. सिंहासन

दोहा

इक इच्छा पूरी करो, यही मात्र जिनराज।
फेर नहीं मांगू कभी, हे जग के शिरताज।।९।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो तीन चौबीसी महापूजा महोत्सव को करें।
वर पंचकल्याणक अधिप जिन नाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी 'ज्ञानमति' युत पाय निजसंपति वरें।।

इत्याशीर्वादः।

प्रशस्ति

शंभु छंद

इस जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में, आर्यखंड में कर्मभूमि।
जो भूतकाल अरु वर्तमान, भावी तीर्थंकर जन्मभूमि।।
'त्रैकालिक चौबीसी विधान' यह तीस चौबीसी विधान से।
लेकर के पृथक् किया मैंने, यह लघु विधान करिये रुचि से।।१।।

श्री वीरसंवत् पच्चीस सौ उन्तिस भादों सुदि चौदस तिथि में।
यह लघु विधान संकलित किया, है गणिनी ज्ञानमती मैंने।।
श्री शांतिसागराचार्य प्रथम उन शिष्य वीरसागर मुनिवर।
ये पट्टाचार्य गुरु मेरे मुझको सिद्धी देवें सुखकर।।२।।

जब तक कुण्डलपुर नंद्यावर्त महल, त्रैकालिक जिनमंदिर।
महावीर मंदिर, श्री ऋषभदेव मंदिर, नवग्रह शांती मंदिर।।
तब तक विधान यह भव्यों को मंगलकारी होवे जग में।
जब तक जिनशासन परम अहिंसा धर्म सौख्यप्रद हो सब में।।३।।

-इति शं भूयात्-

त्रिकाल चौबीसी विधान की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

आरति करो रे,
श्री त्रैकालिक चौबीसी जिन की आरति करो रे।।टेक.।।
भूतकाल के चौबिस जिनवर, तीर्थ अयोध्या में जन्में।
पुनः राज्य वैभव को तजकर, नग्न दिगम्बर मुनी बने।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन की आरति करो रे।।१।।
वर्तमान की चौबीसी में, पाँच अयोध्या में जन्में।
शेष सभी तीर्थंकर अलग, अलग स्थानों में जन्में।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
उन सब जिनवर की जन्मभूमि की आरति करो रे।।२।।
भावि काल के सब जिनवर, साकेतपुरी में जन्मेंगे।
धनकुबेर तब रत्नवृष्टि से, नगरी पावन कर देंगे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
महापद्म आदि चौबीसों जिन की आरति करो रे।।३।।
त्रैकालिक चौबीसी की, प्रतिमाएँ सभी बहत्तर हैं।
धर्मतीर्थ बतलाने से, इनको कहते तीर्थंकर हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चेतन व अचेतन सब तीरथ की आरति करो रे।।४।।
तीनों सन्ध्याओं में जो, जिनवर की आरति करते हैं।
वही ''चन्दनामती'' जगत में, तीन रत्न को वरते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
रत्नत्रय संयुत सब जिनवर की आरति करो रे।।५।।